B.A Part-1 Psy Paper-1 Chapter-Motivation Study material by Dr. Prabha Shree (Guest Faculty Psychology deptt. Vaishali Mahila College, Hajipur) 30.05.20

अभिप्रेरक के प्रकार

Kinds of Motive

अभिप्रेरण (motivation) से सामान्य अर्थ वैसी अवस्था से होता है जो व्यक्ति को कार्य करने के लिए प्रेरित करता है। अभिप्रेरण एक काल्पनिक आंतरिक अवस्था होती है जो व्यवहार करने के लिए व्यक्ति को शक्ति प्रदान करता है तथा एक खास लक्ष्य की ओर व्यवहार को निरंतर ले जाता है।

मनोवैज्ञानिकों ने मुख्य रूप से दो प्रकार के अभिप्रेरक (motive) बताए हैं-

1. **जन्मजात, शारीरिक या जैविक अभिप्रेरक (Inborn, Physiological or Biological Motives)-** जन्मजात अभिप्रेरक वैसे अभिप्रेरक को कहा जाता है जो व्यक्ति में जन्म से ही मौजूद होते हैं। इन अभिप्रेरकों के अभाव में प्राणी का जीवित रहना संभव नहीं है। **भूख, प्यास, नींद, मल-मूत्र त्याग, तापक्रम नियमन आदि जन्मजात अभिप्रेरक के उदाहरण हैं।**

शेरीफ एवं शेरीफ (1956) ने जैविक अभिप्रेरकों की कुछ विशेषताएं बतायी हैं जो इस प्रकार है-

- अभिप्रेरक प्राणी में जैविक मांग अर्थात क्षुब्ध आंतरिक संतुलन के प्रति एक प्रतिक्रिया उत्पन्न करें या करता हो।
- जैविक मांग प्राणी में एक उत्तेजित अवस्था उत्पन्न करती हो।
- अभिप्रेरक की अभिव्यक्ति में एक ही प्रजाति के सभी सदस्यों में समरूपता हो।
- अभिप्रेरक अर्जित नहीं हो।

सभी जैविक अभिप्रेरकों की एक सामान्य विशेषता है कि यह शरीर के अंदर एक संतुलित शारीरिक अवस्था (Balanced Physiological State) बनाकर रखते हैं जिसे समस्थिति कहा गया है। जब किसी कारक द्वारा इस समस्थिति में असंतुलन उत्पन्न होता है, तो इससे व्यक्ति में जैविक अभिप्रेरक की उत्पत्ति होती है।

2. **अर्जित अभिप्रेरक (Acquired motive)-** अर्जित अभिप्रेरक व्यक्ति में जन्म से मौजूद नहीं होते हैं, परंतु सामाजिक रूप से अपने आप को श्रेष्ठ (superior) रखने के लिए व्यक्ति इन्हें सीखता है। यह अभिप्रेरक कुछ ऐसे होते हैं जिसके बिना

व्यक्ति जैविक रूप से तो जिंदा रह सकता है परंतु सामाजिक रूप से उसका जीवित रहना संभव नहीं है। अर्जित अभिप्रेरक के इस सामाजिक महत्व के कारण ही इसे ***सामाजिक अभिप्रेरक*** भी कहा जाता है। ऐसे अभिप्रेरकों को सामाजिक इसलिए कहा जाता है क्योंकि व्यक्ति उन्हें सामाजिक परिस्थितियों जैसे परिवार, पड़ोसियों, स्कूल, कॉलेज के साथियों आदि के बीच रह कर सीखता है। <u>प्रमुख सामाजिक अभिप्रेरक इस प्रकार है-</u> **उपलब्धि की आवश्यकता, संबंधन की आवश्यकता, सत्ता एवं स्तर की आवश्यकता, आक्रमणशीलता की**

आवश्यकता, अनुमोदन आवश्यकता आदि।

इस तरह से हम देखते हैं कि मनोवैज्ञानिकों ने अभिप्रेरकों को मूलत: दो भागों में बांट कर अध्ययन किया है। जैविक अभिप्रेरक व्यक्ति के अस्तित्व बनाए रखने में मदद करता है जबकि सामाजिक अभिप्रेरक व्यक्ति को सामाजिक रूप से जीवित रखता है। इन अभिप्रेरकों के सहारे वह समाज में आदर तथा प्रतिष्ठा पाता है तथा समाज में कुछ महत्वपूर्ण परिवर्तन लाता है।